B.A. I
HIST P-I

①

अशोक का धम्म (Ashoka's Dhamma)

कलिंग युद्ध के बाद अशोक का जीवन ही बदल गया। उसने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया। उसने 'भेरीघोष' के स्थान पर धम्मघोष और 'विहार-यात्रा' के स्थान पर धम्म यात्रा की घोषणा की। उसने 'भाबु शिलालेख' में बौद्ध धर्म के त्रिरत्न बुद्ध, धर्म और संघ में अपना विश्वास प्रकट किया। उसने भिक्षुओं-भिक्षुणियों और उपासकों-उपासिकाओं से कुछ बौद्ध ग्रन्थ पढ़ने का आग्रह किया। अशोक ने बुद्ध के अवशेषों पर ~~स्थापित~~ 80,000 स्तूपों का निर्माण करवाया था। निगाली सागर-स्तम्भ लेख में उसने कनकमुनि बुद्ध के स्तूप को दुबारा बनवाने और उसकी यात्रा करने का उल्लेख किया है। ~~और आठवें शिलालेख सम्बोधि की यात्रा करने का~~ मस्की के लघु शिलालेख में उसने अपने को बुद्ध शाक्य कहा है। कौशाम्बी, सारनाथ और साँची के लघु स्तम्भ लेखों में उसने बौद्ध संघ की एकता पर बल दिया है और उसने भ्रान्तियों को दूर करने के लिए पाटलिपुत्र में बौद्ध संगीति का आयोजन किया था। इन तथ्यों से स्पष्ट हो जाता है कि अशोक ने व्यक्तिगत रूप से बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था।

बौद्ध धर्म स्वीकार करने के उपरान्त भी अशोक ने दूसरे सम्प्रदायों के प्रति धार्मिक सहिष्णुता का परिचय दिया। वह दूसरे के सामाजिक जीवन पर जबरदस्ती अपना धर्म लादना नहीं चाहता था। वह केवल इतना चाहता था कि सभी प्राणी शिष्ट और शीलवान हों और उनका पूर्ण आध्यात्मिक, नैतिक एवं चारित्रिक विकास हो। आजीवकों के

रहने के लिए उसने गुफाएँ बनवाई। ब्राह्मणों बौद्धों, जैनों आदि के प्रति उसने समान व्यवहार का परिचय दिया।

Scanned with CamScanner